लीथल

में समाचार एवं विज्ञापन देने के लिये सम्पर्क करें।

माँगी लाल शर्मा

95719-19059

E-mail:
mangilallithal@yahoo.co.in

लीथल

भारत सरकार का रजि. नं. 43537/85

श्रीमान्_____

वर्ष : 40 | अंक: 24 | हिन्दी पाक्षिक | जयपुर, 20 दिसम्बर, 2025 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : 100 रु. वार्षिक

राज्य सरकार के दो वर्ष – हमारी सरकार ने समृद्ध एवं विकसित राजस्थान की रखी सशक्त बुनियाद दो वर्षों में सुशासन, मुख्यमंत्री ने लूणकरणसर में बीकानेर जिले के 719 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों का किया लोकार्पण- शिलान्यास - ग्रामीण समस्या समाधान शिविर का किया अवलोकन - जिला विकास पुस्तिका, ग्रामीण सेवा शिविर की सफलता की कहानी तथा शहरी सेवा शिविर-2025 पुस्तिका का किया विमोचन

जनकल्याण और चहुंमुखी विकास के लिए उठाए ऐतिहासिक कदम, गरीब को गणेश मानकर सेवक के रूप में कार्य कर रही राज्य सरकार:मुख्यमंत्री

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार गरीब को गणेश मानकर सेवक के रूप में कार्य कर रही है। हमारा नैतिक दायित्व है कि हम सरकार का रिपोर्ट कार्ड जनता के सामने रखें। हमारी सरकार ने बिना किसी भेदभाव के सभी 200 विधानसभा क्षेत्रों में बजट दिया और हर विधानसभा क्षेत्र में विकास रथ के माध्यम से विकास कार्यों का लेखा-जोखा जनता तक पहुंचा रही है।

शर्मा मंगलवार को बीकानेर के लूणकरणसर में ग्रामीण समस्या समाधान शिविर एवं बीकानेर जिले के विकास कार्यों के लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने दो वर्षों में प्रदेश में सुशासन, जनकल्याण और चहुंमुखी विकास के लिए ऐसे अभूतपूर्व कदम उठाए हैं, जो ऐतिहासिक होने के साथ ही समृद्ध एवं विकसित राजस्थान की एक सशक्त बुनियाद भी हैं।

समस्याओं के समाधान के लिए आमजन के द्वार पर पहुंच रही सरकार–

शर्मा ने कहा कि जनसेवा के भाव के साथ ग्रामीण एवं शहरी समस्या समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इससे पहले भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर 17 सितंबर से प्रदेश भर में एक महीने तक ग्रामीण और शहरी सेवा शिविरों का आयोजन किया था। इन शिविरों में प्रशासन को आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए उनके द्वार तक लाया जा रहा है। शहरी शिविरों के जरिए जन्म, मृत्यु, विवाह पंजीकरण, फायर एनओसी, ट्रेड लाइसेंस और सीवर कनेक्शन से जुड़े कार्यों से लेकर आवास पट्टे, नामांतरण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जुड़ने संबंधी कार्य भी करवाए जा रहे हैं। वहीं, ग्रामीण समस्या समाधान शिविरों में सहमति विभाजन, नामांतरण एवं रास्ते खुलवाने जैसे कार्य करवाए जा रहे हैं। उन्होंने आह्वान किया कि आमजन इन शिविरों का पूरा लाभ उठाएं।

किसान, युवा, महिला और गरीब के उत्थान के लिए उठाए कदम– मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने किसान, युवा, महिला और गरीब के उत्थान के लिए कई कदम उठाए हैं। हमने किसानों के लिए सम्मान निधि को 6 हजार से बढ़ाकर 9 हजार रुपये किया गया है तथा चरणबद्ध रूप से इसे 12 हजार रुपये किया जाएगा। इसी तरह हमारी सरकार ने इन दो वर्षों में युवाओं के लिए सरकारी सेवाओं में अवसर बढ़ाते हुए लगभग 92 हजार नियुक्तियां प्रदान की है तथा 1 लाख 56 हजार पदों पर भर्तियां प्रक्रियाधीन है।

फूलचंद लोकण्डा को सब इंस्पेक्टर से इंस्पेक्टर पद पर प्रमोशन होने पर पद्मश्री मुन्ना मास्टर द्वारा गौशाला पूर्णिमा सत्संग में सम्मान किया।

अपराधों पर अंकुश के लिए पुलिस थानों का आधुनिकीकरण किया जाए- मुख्य सचिव

जयपुर। मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास ने कहा कि प्रदेश में अपराधों के आंकड़ों में कमी शुभ संकेत है। अब मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की मंशानुरूप प्रदेश को अपराध मुक्त बनाने के लिए और भी प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस के रेस्पोंस टाइम को कम करना, त्वरित अनुसंधान और पुलिस थानों का आधुनिकीकरण सुनिश्चित किया जाए। मुख्य सचिव मंगलवार को शासन सचिवालय में भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन के संबन्ध में आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने पुलिस विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए की सभी थानों का डिजिटलाइजेशन करने के साथ-साथ आधुनिक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने थानों में निर्बाध और स्ट्रोंग वाई-फाई की सुविधा के लिए सभी पुलिस थानों में राज नेट की कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए भी निर्देशित किया।

उन्होंने कहा कि थानों में महिला कॉन्सटेबल की नियुक्ति सुनिश्चित की जाए, जिससे महिलाओं से संबंधित अपराधों पर अंकुश लगाया जा सकता है। साथ ही पुलिस अधिकारी सुनिश्चित करें कि थानों में दर्ज एफआईआर और चार्जशीट पेश करने के बीच निश्चित समय सीमा से ज्यादा समय नहीं लगे।

श्रीनिवास ने कहा कि नये कानून के तहत अपराध कहीं भी हो उसकी रिपोर्ट किसी भी पुलिस थाने में ज़ीरो FIR के रूप में दर्ज कराई जा सकती है।

प्रदेश के सभी नागरिकों के लिए राजकॉप एसओएस अलर्ट उपलब्ध है। महिलाओं के लिए तत्काल सहायता प्रदान करने के लिए प्रदेश में राजकॉप नागरिक मोबाइल एप्लिकेशन पर नीड हैल्प सुविधा है। उन्होंने कहा कि आम जन को इन नए प्रावधानों और नवाचारों के बारे में जागरूक किया जाए, ताकि उन्हें इसका पूरा लाभ मिले।

बैठक में पुलिस महानिरीक्षक इंटेलिजेंस श्री प्रफुल्ल कुमार ने कहा कि पुलिस द्वारा ई साक्ष्य एप का प्रयोग किया जा रहा है। इससे पुलिस को घटनास्थल के वीडियो, फोटो और गवाहों के बयान डिजिटल रूप से रिकॉर्ड करने और सुरक्षित रखने की सुविधा मिली है। उन्होंने बताया कि संबंधित केस की सारी जानकारी भी इस एप पर उपलब्ध रहेगी। उन्होंने बताया कि नवीन अपराधिक विधियों के अर्न्तगत दर्ज प्रकरणों में 60 दिवस में निस्तारित किए प्रकरणों की संख्या में इजाफा हुआ है।

बैठक में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती गायत्री राठौड़, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस हवा सिंह घुमारिया, भूपेन्द्र साहू, महानिरीक्षक पुलिस श्री प्रफुल्ल कुमार, अजयपाल लांबा, उप महानिरीक्षक पुलिस दीपक भार्गव, राजस्थान राज्य फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (SFSL) के निदेशक डॉ. अजय शर्मा तथा गृह एवं विधि विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

सीताराम मंदिर में पौषबड़ा महोत्सव

बगरू (का.सं.)। अजयराजपुरा स्थित पंचायती मंदिर श्री सीताराम मंदिर में पौषबड़ा महोत्सव श्रद्धा से मनाया गया। मंदिर परिसर को आकर्षक रूप से सजाया गया तथा भगवान श्री सीताराम जी की भव्य झांकी सजाकर श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ विराजमान की गई। मंदिर पुजारी पुरुषोत्तम स्वामी ने बताया कि आयोजन के दौरान भजन-कीर्तन एवं संकीर्तन हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से भाग लिया। इसके बाद ठाकुर जी को पौषबड़ों का भोग अर्पित कर प्रसाद स्वरूप वितरण किया गया। इस अवसर पर ओमप्रकाश प्रजापत, रूपनारायण भावरीया, राकेश शर्मा, दिनेश जैन, पूरण सेन, मुकेश डागर, सत्यनारायण जैन, आदित्य खांडल उपस्थित रहे।

श्याम कृपा तेल घाणी

हमारे यहां सरसों, तिल, मूंगफली का शुद्ध एवं ताजा घाणी का तेल उचित मूल्य पर हर समय मिलता है।

0 रसायन

100 ताजा

थोक भाव में सभी प्रकार की खल मिलती है।

नितेश साहू
7737410556

100 प्रतिशत पारदर्शिता कोल्ड परसिड ऑयल

एच-1, 46ए, पुराना रीको, बोहरा हॉस्पिटल के पास, लिंक रोड, बगरू

दी एडवोकेट्स एसोसिएशन बगरू की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण सम्पन्न

बगरू (का.सं.)। दी एडवोकेट्स एसोसिएशन बगरू की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का गत दिनों शपथ ग्रहण समारोह हुआ। मुख्य अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता एवं बीसीआर सदस्य सुशील शर्मा रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में महेश लाटा, जीपी शर्मा, विमल शर्मा (दी बार एसोसिएशन जयपुर कार्यकारिणी सदस्य), सुरेश शर्मा, गोगराज चौधरी, नेमसिंह राठौड़, प्रमोद शर्मा एवं योगराज पडियार उपस्थित रहे। अतिथियों ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। शपथ लेने वालों में संरक्षक मोहम्मद इस्लाम खान, अध्यक्ष भंवर चौधरी, महासचिव गौरी शंकर शर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश ताम्बी, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश चौधरी, कोषाध्यक्ष दिनेश चन्द शर्मा, संयुक्त सचिव सुरेन्द्र मुण्डोतियां, मीडिया प्रभारी नंद किशोर आलोरियां, पुस्तकालय सचिव अन्नू पाटनी, सांस्कृतिक सचिव उर्मिला चौधरी तथा संगठन सचिव श्याम बाबू चौधरी शामिल रहे। कार्यकारिणी सदस्य के रूप में रमेश रोहितवाल, प्रहलाद सहाय शर्मा, नितिन भारद्वाज, बलराम चौधरी, बलराम चौधरी, श्रुति गोयल, धर्मवीर देवन्दा, सुमन यादव, श्रीराम मीणा एवं अमन बडाया को भी शपथ दिलाई गई।

बगरू उपजिला अस्पताल में विशेष आरोग्य शिविर

बगरू (का.सं.)। राज्य सरकार के दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में बगरू स्थित उपजिला अस्पताल में जनस्वास्थ्य को समर्पित विशेष आरोग्य शिविर गत दिनों आयोजित किया गया। शिविर का उद्देश्य मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की परिकल्पना के अनुरूप ग्रामीण व कस्बाई क्षेत्रों तक प्रभावी चिकित्सा सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना रहा। प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. एचएन बाज्या ने बताया कि शिविर में विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने मरीजों की जांच कर उन्हें उपचार संबंधी परामर्श दिया तथा आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराई गईं। शिविर में लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, समय पर जांच कराने और बीमारियों की प्रारंभिक पहचान के प्रति जागरूक किया गया। इस दौरान गैर-संचारी रोगों की स्क्रीनिंग, टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जांच, गर्भवती महिलाओं की एएनसी जांच, नवजात शिशुओं का टीकाकरण सहित कई स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं। साथ ही राज्य सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी देकर आमजन को लाभांवित किया गया।

अरिहंत ग्लोबल ने मनाया 12वाँ वार्षिकोत्सव, 'मिशन 100 टीम' थीम के साथ ऊर्जा से भरपूर भव्य उत्सव बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.सं.)। डिजिटल सेवाओं, मोबाइल संचार सुविधाओं और आधुनिक तकनीकी समाधानों में अग्रणी संस्था अरिहंत ग्लोबल ने इस वर्ष अपना 12वाँ वार्षिकोत्सव अत्यंत जोश, उत्साह और पारिवारिक वातावरण में मनाया। इस वर्ष समारोह का मुख्य विषय मिशन 100 टीम ङ्क ऊर्जा के साथ उत्सव रखा गया, जिसका उद्देश्य आने वाले समय में 100 से अधिक सदस्यों वाली सशक्त, प्रशिक्षित और ऊर्जावान टीम का निर्माण करना, डिजिटल रोजगार सृजन, फ्रेंचाइजी सेगमेंट में प्रवेश करना है। यह भव्य समारोह काश्मी बैंक्वेट, खंडेलवाल ढाबेवाला, जयपुर में आयोजित हुआ, जहाँ संस्था के सभी कर्मचारियों के साथ उनके परिवारजन भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे, जिससे कार्यक्रम का वातावरण और अधिक आत्मीय व उल्लासपूर्ण हो गया। समारोह में उद्योग, शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र के सम्मानित अतिथियों– डॉ. अरुण अग्रवाल, जगदीश सोमानी, मनीष जैन, अंकुर जोशी, मुकुल गोस्वामी, प्रो. त्रिलोक जैन एवं गौमाता सेवार्थ ग्रुप के वरिष्ठ सदस्य– ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सभी अतिथियों ने अरिहंत ग्लोबल की 12 वर्षों की विकास यात्रा, टीम-संस्कृति, नवाचार तथा समाज के प्रति योगदान की सराहना की। निर्देशक राहुल कुमार जैन ने संस्थान के प्लेटफ़ॉर्म और नई पहलों पर प्रकाश डाला। संस्थान के संस्थापक राहुल जैन, सुनीता जैन ने अपने उद्बोधन में अरिहंत ग्लोबल द्वारा विकसित किए गए अनेक प्रमुख डिजिटल मंचों और सेवाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि– मानव इन्वाइट्स, संचार मंच सेवाएँ (सी-पा.एस प्रकार की सेवाएँ) तथा अन्य डिजिटल समाधान, पिछले वर्षों में अनेक संगठनों, संस्थानों और ग्राहकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। उन्होंने इस अवसर पर इस वर्ष प्रारंभ किए गए डिजिटल एम्पावरमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम (DETP) के बारे में भी विस्तार से बताया।

उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम विशेष रूप से–

नवउद्यमियों (स्टार्टअप्स), लघु और मध्यम उद्योगों, युवाओं के कौशल विकास, और तकनीकी दक्षता बढ़ाने के लिए तैयार किया गया है।

इसका उद्देश्य है– युवाओं, उद्यमियों और छोटे व्यवसायों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाकर उन्हें रोजगार सृजन, व्यवसाय विस्तार और राष्ट्र निर्माण में सक्षम बनाना। वार्षिक सम्मान समारोह कार्यक्रम के दौरान संस्था में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया।

इस वर्ष का वर्ष के सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी सम्मान राशिका शर्मा को उनके समर्पण, रचनात्मकता और उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया।

समारोह में विनोद कुमावत, अंकुर, अंकित जैन, लोकेश मेहरा, आयुषी पाटनी, शैलेन्द्र सिंह, कुलदीप सिंह, अमित गौतम, संजय कंवरिया तथा रवीना जांगिड़– को भी विभिन्न श्रेणियों में सम्मान प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का समापन मिशन 100 टीम के संकल्प के साथ हुआ, जहाँ सभी अतिथियों, टीम सदस्यों और उनके परिवारों ने एकजुट होकर भविष्य में नई ऊर्जा, नए नवाचार और मजबूत टीमभावना के साथ और भी ऊँचाइयाँ प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय किया।

जयपुर में पहली बार ड्रोन से पहुंचेंगे मानव अंग: ग्रीन कॉरिडोर बनाने की नहीं रहेगी जरूरत

जयपुर। अब तक राजस्थान में कृषि और डिफेंस के क्षेत्र में लोगों ने ड्रोन का उपयोग होते देखा है। लेकिन जयपुर में अब ड्रोन की मदद से मानव अंगों का ट्रांसपोर्ट किया जाएगा। महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी ने यह पहल की है, जिसके तहत पहली बार कैडेवर (मृत शरीर से प्राप्त) अंगों को अस्पताल तक पहुंचाने के लिए ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। यह कदम मेडिकल क्षेत्र में ड्रोन के उपयोग को एक नया आयाम देगा।

तय समय के अंदर किया जा सकेगा प्रत्यारोपण

महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर सुकांत दास और मार्केटिंग निदेशक वीरेंद्र पारीक ने बताया- ब्रेन डेथ के बाद प्राप्त अंगों का प्रत्यारोपण एक निश्चित समय सीमा के भीतर ही किया जा सकता है। वर्तमान में एम्बुलेंस और ग्रीन कॉरिडोर का उपयोग किया जाता है, लेकिन ड्रोन तकनीक ट्रैफिक, दूरी और समय की बाधाओं को दूर कर अंगों को कम समय में एक से दूसरे अस्पताल तक सुरक्षित पहुंचाएगी, जिससे प्रत्यारोपण की सफलता दर बढ़ेगी। जयपुर के गोपालपुरा स्थित होटल में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर महात्मा गांधी हॉस्पिटल के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर सुकांत दास और मार्केटिंग निदेशक वीरेंद्र पारीक ने यह जानकारी दी। इसके उपयोग को लेकर आज मैजिक मायना कंपनी जो ड्रोन बना रही है और महात्मा गांधी हॉस्पिटल में एमओयू भी हुआ है । प्रेस कॉन्फ्रेंस में महात्मा गांधी हॉस्पिटल के सीओओ सुकांत कुमार दास, मैजिक मायना के को-फाउंडर सुनील नायर, हेड सप्लायर घनश्याम पुरवानी और महात्मा गांधी के मार्केटिंग निदेशक वीरेंद्र पारीक मौजूद थे। मेडिकल कॉलेज प्रशासन के अनुसार, यह एक पायलट प्रोजेक्ट है जिसे जल्द ही धरातल पर उतारा जाएगा। सुकांत दास ने स्पष्ट किया कि इस सेवा के लिए मरीजों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। उनका दावा है कि देश में पहली बार कैडेवर अंगों के परिवहन के लिए ड्रोन का उपयोग किया जा रहा है।

सम्पादकीय....

यही तो अंदेशा था

धूम-धड़ाके से बचत उत्सव मनाने के बाद अब बारी उसकी कीमत चुकाने की है। प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता दिवस को लाल किले से जीएसटी ढांचे में बदलाव का एलान किया था। नवरात्रि के साथ नई दरें लागू हुईं, तो यह धारणा बनाने की कोशिश हुई कि भारतीय बाजार में मांग एवं उपभोग की कमी से उपजी तमाम आर्थिक समस्याओं का अब हल निकल आएगा। यह समाधान कितना हुआ, यह अपने-आप में महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। मगर एक सवाल राजकोष पर इसके असर का भी है, जिसकी ओर तब अनेक हलकों से ध्यान दिलाया गया था। अब मुद्दा सामने है। महाराष्ट्र के वित्त मंत्री अजित पवार ने कहा है कि कल्याण योजनाओं पर अधिक खर्च के कारण पहले से ही राजकोषीय दबाव में चल रही राज्य सरकार को जीएसटी दरों में कटौती से सालाना 15 हजार करोड़ रुपये का नुकसान होने जा रहा है। इसकी क्षतिपूर्ति के लिए राज्य सरकार उत्पाद शुल्कों में बदलाव पर विचार कर रही है। यानी जीएसटी में मिली राहत को उत्पाद शुल्क में वृद्धि से वापस लिया जाएगा। या फिर पहले से ही 9.32 लाख करोड़ रुपये के कर्ज बोझ तले दबी राज्य सरकार नए ऋण लेगी। कर्ज का गणित यह है कि उसका ब्याज चुकाना होता है और वह भी करदाताओं की जेब से ही आता है। कर्जदाता मोटी जेब वाली कंपनियां और लोग होते हैं, जबकि ज्यादा बोझ फटी जेब वालों पर पड़ता है। अब अगर जीएसटी कटौती से हुए फायदों पर ध्यान दें, तो कुछ ताजा आंकड़े इसकी कहानी बता देते हैं। रोजमर्रा की जरूरत के सामान बनाने वाली (एफएमसीजी) कंपनियों की बिक्री दर में अक्टूबर में हुई बढ़ोतरी नवंबर में गायब हो गई। और अक्टूबर की कथा भी यह थी कि बिक्री में बढ़ोतरी बाजार के दीर्घकालिक रुझान के अनुरूप ही रही। मसलन, अक्टूबर- नवंबर के साझा आंकड़ों के मुताबिक कार बाजार में एसयूवी की बिक्री 17 फीसदी बढ़ी, लेकिन छोटी कारों के मामले में यह तीन प्रतिशत ही रही। यानी बाजार के विस्तार की उम्मीदें पूरी नहीं हुई हैं। लाभ धनी लोगों तक सीमित रहा, जबकि अब कीमत चुकाने का ज्यादा बोझ आम लोग उठाएंगे!

भाजपा को शहरों में चुनाव जिताते रहे मतदाता गांवों की वोटर लिस्ट में जुड़वा रहे अपना नाम, योगी की टेंशन बढ़ी

उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण ने जिस राजनीतिक बहस को जन्म दिया है, वह महज़ तकनीकी प्रक्रिया तक सीमित नहीं है। यह बहस अब शहरी और ग्रामीण रिश्तों, पलायन की हकीकत, पहचान के संकट और सत्ता संतुलन तक जा पहुँची है। एक ओर चुनाव आयोग मतदाता सूचियों को शुद्ध और अपडेट करने की कवायद में जुटा है, तो दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी के लिए यह प्रक्रिया उसकी परंपरागत शहरी ताकत के कमजोर होने की चेतावनी बनकर उभरी है।

हम आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश में स्ढ्क्रके पहले चरण के अंत तक जो तस्वीर उभर रही है, वह चौंकाने वाली है। राज्य भर में लगभग 17.7 प्रतिशत स्ढ्क्रऔर गणना प्रपत्र जमा नहीं हुए हैं, जिनकी संख्या करीब 2.45 करोड़ आंकी जा रही है। यह राज्य के कुल मतदाताओं का लगभग 15-18 प्रतिशत है। खास बात यह है कि इन गायब मतदाताओं का बड़ा हिस्सा शहरी क्षेत्रों से जुड़ा माना जा रहा है। लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी, गाजियाबाद, नोएडा, आगरा, मेरठ, सहारनपुर और अयोध्या जैसे शहरों में मतदाता सूचियों में बड़ी संख्या में कटौती की आशंका ने भाजपा को बेचैन कर दिया है। आंकड़े बताते हैं कि लखनऊ में लगभग 2.2 लाख, प्रयागराज में 2.4 लाख, गाजियाबाद में 1.6 लाख, सहारनपुर में 1.4 लाख और अयोध्या में करीब 30 हजार से लेकर 4,100 तक मतदाताओं के नाम कट सकते हैं।

समस्या की जड़ स्ढ्क्रका वह नियम है, जिसके तहत अब कोई भी मतदाता केवल एक स्थान पर ही पंजीकृत रह सकता है। दरअसल, वर्षों से शहरों में रह रहे लाखों लोग अब भी अपने पैतृक गांवों में वोटर बने हुए थे। जब सख्ती बढ़ी, तो उन्होंने शहर की बजाय गांव को प्राथमिकता दी। इसकी वजहें कई हैं। पैतृक ज़मीन और विरासत के दस्तावेज़, पंचायत चुनावों में प्रभाव, ग्रामीण कल्याण योजनाओं से जुड़ी पहचान और सबसे बढ़कर गांव से भावनात्मक रिश्ता।

भाजपा के लिए यह इसलिए भी चिंता का विषय है क्योंकि शहरी मतदाता लंबे समय से उसका मजबूत आधार रहे हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी ने 17 में से 12 शहरी सीटें जीती थीं और उससे पहले नगर निकाय चुनावों में सभी मेयर पदों पर कब्जा जमाया था। लेकिन उसी 2024 में प्रयागराज और अयोध्या जैसी सीटों का हाथ से निकल जाना पहले ही खतरे की घंटी बजा चुका था। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से लेकर उपमुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष और संगठन महामंत्री तक मैदान में उतर आए हैं। विधायकों और सांसदों को शादियों तक में न जाने की सलाह दी गई थी, ताकि वे SIR पर निगरानी रख सकें। हालांकि चुनाव आयोग एसआईआर की अब समयसीमा बढ़ा चुका है।

देखा जाये तो यह पूरा घटनाक्रम केवल भाजपा की चुनावी रणनीति की समस्या नहीं है, बल्कि यह उत्तर प्रदेश की सामाजिक-राजनीतिक संरचना को भी दर्शाता है। पिछले दो दशकों में राज्य से बड़े पैमाने पर पलायन हुआ है। लोग रोज़गार के लिए शहर आए, लेकिन पहचान, अधिकार और भविष्य की सुरक्षा आज भी गांव से जुड़ी रही। स्ढ्क्रने इसी दबी हुई सच्चाई को सतह पर ला दिया। भाजपा की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उसने शहरी भारत को विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर और न्यू इंडिया के नैरेटिव से जोड़ा। लेकिन यह नैरेटिव उन लाखों लोगों की प्रशासनिक और भावनात्मक हकीकत से टकरा रहा है, जिनके लिए वोटर आईडी केवल मतदान का साधन नहीं, बल्कि जमीन, राशन, पेंशन और पहचान का प्रमाणपत्र है। जब गांव की वोटर लिस्ट से नाम कटने का मतलब पंचायत में आवाज़ खोना और पैतृक हक़ पर सवाल बन जाए, तो शहर की सुविधाएं भी कमज़ोर पड़ जाती हैं।

बहरहाल, राजनीतिक रूप से देखें तो यदि शहरी मतदाता बड़ी संख्या में शहरों की सूचियों से बाहर हो जाते हैं, तो भाजपा का गणित गड़बड़ा सकता है। शहरी क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत पहले ही अपेक्षाकृत कम रहता है। अब यदि वोटर सूची ही सिकुड़ गई, तो विपक्ष के लिए नए अवसर खुलेंगे। खासकर 2027 के विधानसभा चुनावों में जहां हर सीट पर कुछ हज़ार वोटों का अंतर निर्णायक होता है। इसके सामाजिक निहितार्थ और भी गहरे हैं। यह स्थिति बताती है कि भारत का शहरीकरण अधूरा है, लोग शहरों में रहते हैं, लेकिन नागरिक अधिकारों और पहचान के स्तर पर पूरी तरह शहरी नहीं हो पाए हैं।

नितिन नवीन की ताजपोशी के मायने

नरेंद्र मोदी के दौर की बीजेपी का जब इतिहास लिखा जाएगा, तब उसकी तमाम खूबियों और खामियों के साथ एक तथ्य को शिद्दत से याद किया जाएगा। वह है पार्टी का हर बार चौंकाने वाला फैसला लेना। राजनीति के लिहाज से 45 साल की उम्र युवा मानी जाती है। राजनीति में युवाओं को शीर्ष पर बैठाने की परंपरा कम ही रही है। लेकिन बीजेपी ने 45 साल के नितिन नवीन को अपना बॉस घोषित कर दिया है। नितिन को फिलहाल पार्टी ने अपना कार्यकारी अध्यक्ष बनाया है, ऐसा माना जा रहा है कि अगले साल जनवरी के आखिर तक उन्हें पूर्णकालिक अध्यक्ष के तौर पर चुन लिया जाएगा।

नितिन की ताजपोशी पर चर्चा से पहले बीजेपी से ही जुड़े अतीत के एक किस्से को याद कर लिया जाना चाहिए। मई 1996 में तेरह दिनी वाजपेयी सरकार के विश्वासमत पर चर्चा के दौरान सुषमा स्वराज ने कांग्रेस के तत्कालीन नेतृत्व से पूछा था, कहां है आपकी सेकंड लाइन ऑफ लीडरशिप। हमारी ओर देखिए, वेंकैया हैं, अनंत हैं, प्रमोद हैं। अटल-आडवाणी और जोशी के दौर की बीजेपी में बिना शक ये तीनों ही नाम शीर्ष नेतृत्व में शामिल थे। पार्टी की दूसरी पांत के नेताओं में सुषमा के बताए तीन नामों के साथ ही उनका भी नाम भी शामिल था। बाद के दिनों में अरूण जेटली को भी इसी पंक्ति में शामिल कर लिया गया था। ऐसे में यह सवाल पूछा जा सकता है कि क्या नितिन नवीन का नाम दूसरी पंक्ति के नेताओं में शुमार होता है। निश्चित तौर पर इसका जवाब ना में है। भले ही वे पांच बार के विधायक हों, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर उनका नाम इतना चर्चित नहीं रहा है। बीजेपी के

मुख्य संगठन में छत्तीसगढ़ के प्रभार की जिम्मेदारी छोड़ दें तो इसके पहले कोई बड़ी भूमिका भी नहीं सौंपी गई थी। भारतीय जनता युवा मोर्चा की बिहार इकाई के वे अध्यक्ष और इसी मोर्चे के राष्ट्रीय महामंत्री जरूर रहे हैं। युवा मोर्चा संभालना और मुख्यधारा के संगठन को संभालना अलग - अलग है। ऐसे में नवीन के सामने बड़े और दिग्गज नेताओं से भरी बीजेपी को संभालना बड़ी चुनौती होगी। वैसे बीजेपी कैडर आधारित पार्टी है, लिहाजा यह भी माना जा सकता है कि उन्हें ज्यादा दिक्कत नहीं होनी है।

बीजेपी के जानकारों का तर्क है कि नितिन नवीन को राष्ट्रीय भूमिका देकर पार्टी ने एक तरह से पीढ़ीगत बदलाव की शुरूआत की है। माना जा रहा है कि आने वाले दिनों मेंम बीजेपी में और भी युवा चेहरों को मौका मिलेगा। वैसे देखा जाए तो आजकल बीजेपी में युवाओं और महिलाओं पर जोर है। हालिया बिहार विधानसभा के चुनाव प्रचार में नरेंद्र मोदी एमवाई का नया विश्लेषण युवा और महिला के रूप में कर ही चुके हैं। वैसे भी वे गरीब, किसान, महिला और जवान की जाति का अक्सर जिक्र करते हैं। कह सकते हैं कि नितिन नवीन भाजपा की इसी नई वर्ग व्यवस्था के सशक्त प्रतीक हैं।

हाल के दिनों में बीजेपी में पिछड़ा नेतृत्व पर कुछ ज्यादा ही फोकस किया गया। इससे बीजेपी का पारंपरिक सवर्ण वोट बैंक दबे स्वर से नाराजगी भी जाहिर करता रहा है। विराट उभार से पहले बीजेपी को बाभन-बनिया की पार्टी भी कहा जाता था। इसमें कायस्थ और किंचित क्षत्रिय वर्ग भी जुड़ा हुआ था। नितिन नवीन इन्हीं में से एक कायस्थ वर्ग से आते हैं। वैसे बिहार विधानसभा चुनाव के दौरान पाटलिपुत्र से कायस्थ उम्मीदवार ना देने की वजह से बीजेपी का कायस्थ वोटर किंचित नाराज भी दिखा था। इस संदर्भ को देखते हुए एक वर्ग कह रहा है कि नितिन को केंद्रीय नेतृत्व सौंपकर बीजेपी ने अपने पारंपरिक सवर्ण मतदाता वर्ग को साधने की कोशिश की है। वैसे कुछ लोगों का यह भी मानना है कि नितिन नवीन की ताजपोशी आगामी पश्चिम बंगाल चुनाव को भी ध्यान में रखकर किया गया है। पश्चिम बंगाल की राजनीति में लंबे समय तक कायस्थ समाज का दबदबा रहा है। राज्य के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे ज्योति बसु और पहले मुख्यमंत्री विधानचंद्र रॉय इसी समुदाय से थे। ज्योति बसु जहां 23 साल तक मुख्यमंत्री रहे, वहीं विधानचंद्र रॉय के हाथ 14 साल तक राज्य की कमान रही। नितिन नवीन के जरिए बंगाल के इस वर्ग के वोटरों को भी पार्टी ने बड़ा संदेश दिया है।

नितिन नवीन को नेतृत्व सौंपे जाने को लेकर कुछ महीने पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भाजपा को मिले संकेतों का भी जिक्र किया जा रहा है। संघ ने बीजेपी को संकेत दिया था कि पिछड़े-दलित आदि को शासन और प्रशासन से मिले फायदों का जिक्र भले ही करे, लेकिन संगठन के मामलों में जातीय आधार पर फैसले ना ले। संघ का पार्टी को यह भी संकेत था कि वह संगठन की भूमिकाएं तय करते वक्त कार्यकर्ताभाव और उसकी संगठन क्षमता और निष्ठा को देखे। नितिन नवीन की नियुक्ति को इस निकष पर भी कसा जा सकता है। नवीन पार्टी के पुराने कार्यकर्ता हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में सक्रिय रहे हैं। संगठन ने जो भी भूमिका सौंपी, उसे संगठन के लिहाज से पूरा करने की कोशिश की है। छत्तीसगढ़ राज्य में बीजेपी की पिछली जीत ने उनके संगठन कौशल की ओर झांकने का मौका दिया। कह सकते हैं कि उनकी नियुक्ति के पीछे ये भी कारण रहे होंगे। हालांकि आलोचक कह सकते हैं कि नितिन की तुलना में संगठन में खुद को खपाने वाले बहुत लोग अब भी सक्रिय हैं। फिर उन्हें क्यों नहीं मौका मिलना चाहिए। यह तर्क वाजिब हो सकता है। लेकिन यह भी सच है कि राजनीतिक फैसले लेते वक्त कई बिंदुओं पर ध्यान दिया जाता है। बीजेपी अक्सर दावा करती है कि वह पढ़े-लिखे लोगों को तवज्जो देती है। बिहार विधानसभा चुनावों के दौरान कुछ विपक्षी दलों के प्रवक्ताओं की उनकी आक्रामक और बदतमीज व्यवहार के चलते आलोचना की थी।

प्रदूषण का हल है, बस प्रतिबद्धता चाहिए

भारत जहरीली हवा में इस सघनता से ढका हुआ है कि यह हमारे जीवन की दिशा तय कर रही है। देश ऐसी सुबह में टहलने का अभ्यस्त हो गया है, जब सिर के ऊपर नीला आसमान होता ही नहीं। हमारी सुबह वेदर एप पर नजर गड़ाने से होती है, जिसमें प्रदूषण की चेतावनी होती है। मास्क महामारी से बचने के लिए नहीं, पार्टिकुलर मैटर से बचने के लिए लगाये जाते हैं। प्रदूषण की वैश्विक रैंकिंग शर्मिंदा करती है। दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 14 भारत में हैं, जिनमें से दिल्ली, गाजियाबाद, बेगूसराय, नोएडा, फरीदाबाद, कानपुर और लखनऊ सबसे प्रदूषित शहरों में हैं। दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक अक्सर 450 के ऊपर रहता है। समुद्रतटीय हवाओं में भीगी मुंबई में सूचकांक 300 के आसपास रहता है, तो कोलकाता में यह 200-300 के बीच रहता है। यह चेतावनी है कि कोई महानगर प्रदूषण से बचा हुआ नहीं है। शहरों में पीएम 2.5 स्तर डब्ल्यूएचओ के मानकों से 20-25 गुना ज्यादा है।

संकट के इस क्षण में संसद में सामूहिक चिंता दिखी। प्रदूषण पर बहस ऐसे आंकड़ों के साथ शुरू हुई, जो सच नहीं लगते थे। विपक्ष की तरफ से जवाब की मांग की जा रही थी, पर्यावरण कार्यकर्ता तो पहले ही क्षुब्ध थे, और नागरिक आशा, निराशा और थकावट के बीच संसदीय कार्यवाही पर नजरें गड़ाये थे। तभी ऐसा क्षण आया, जो हाल की संसदीय स्मृति में अभूतपूर्व था। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अपने राजनीतिक करियर में पर्यावरणीय मुद्दे पर सबसे प्रभावशाली हस्तक्षेप किया। उनके भाषण में क्षोभ के साथ सरकार से तत्काल दखल देने का भाव था। वैश्विक एक्यूआइ रैंकिंग पेश करते हुए उन्होंने जहां यह कहा कि मौजूदा संकट वैचारिक विभाजन से ऊपर चला गया है, वहीं उन्होंने सरकार से मांग की कि इसे मौसमी बाधा की बजाय राष्ट्रीय आपातकाल की तरह देखा जाये। उनका कहना था कि इस संकट के हल के लिए सरकार द्वारा उठाये जाने वाले किसी भी कठोर कदम का विपक्ष समर्थन करेगा। उन्होंने प्रधानमंत्री से अपील की कि वह प्रदूषण के खिलाफ कारगर योजना ले आयें। इसका असर सदन में दिखा। तभी पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने जवाब देते हुए विपक्ष के आरोप को खारिज किया कि सरकार इस समस्या पर निष्क्रिय रही। उन्होंने औद्योगिक मानदंड सख्त करने, वाहन उत्सर्जन के मानक कड़ा करने तथा निर्माण स्थलों की निरंतर निगरानी किये जाने के बारे में सदन को याद दिलाया। उन्होंने प्रदूषण पर राजनीति करने का आरोप भी विपक्ष पर लगाया।

संसद की दीवारों से बाहर इन तर्कों का कोई असर नहीं पड़ा। प्रदूषण की भीषणता चारों ओर चर्चा का विषय है।

पैदल चलते लोग दमा के बढ़ते मामलों की बात कर रहे हैं, शिक्षकों की शिकायत है कि स्कूलों में छात्रों की बाहरी गतिविधियां रोक देनी पड़ी हैं, तो बुजुर्गों का कहना है कि उन्हें सुबह की सैर छोड़नी पड़ी है। अदालतों तक का धैर्य जवाब दे रहा है और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों का गुस्सा सरकारों पर फूट पड़ा है। प्रदूषण नियंत्रण बजट का या तो इस्तेमाल नहीं होता या बहुत मामूली हिस्सा इस्तेमाल होता है। कूड़ा प्रबंधन के नियम दिखावटी ज्यादा हैं। पर्यावरण कार्यकर्ताओं के मुताबिक, जब तक सत्ता राजनीति प्रदूषण पर युद्ध जैसी गंभीरता नहीं दिखायेगी, तब तक धरातल पर कुछ भी नहीं बदलेगा। किसी भी युद्ध में जीत तब तक नहीं मिल सकती, जब तक उसके कारणों की पड़ताल न की जाये। भारत में प्रदूषण मानव निर्मित संकट है, जो प्रशासनिक संवेदनहीनता व नीतिगत अपंगता से इस स्थिति में पहुंचा है। कारों की बढ़ती बिक्री से सड़कें प्रदूषणजनित धुएं से भरी हैं, जबकि बसें सिमट रही हैं और यात्रियों के दबाव में मेट्रो प्रणाली चरमरा जाती है। निर्माण गतिविधियों के निरंतर चलते रहने से प्रदूषण बढ़ता है। धूल नियंत्रण के दिशानिर्देश कागजों पर ही ज्यादा हैं। अर्थव्यवस्था निस्संदेह बढ़ रही है, पर सेहत के मोर्चे पर मनुष्य इसकी कीमत चुका रहा है। अनगिनत जगहों में कूड़ा खुले में जलाया जाता है। सीवेज नदियों-तालाबों को गंदा और प्रदूषित कर रहा है। उत्तर भारत में हर सर्दी में किसान खेतों में पराली जलाते हैं, और उनका कहना है कि सरकारी मदद के बगैर इसका विकल्प चुनना संभव नहीं है। पराली के निष्पादन की तकनीक अस्तित्व में है, लेकिन नीति इतनी धीमी गति से चलती है कि तकनीक को जमीन पर उतारना मुश्किल है। आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति चरम पर है। राज्य एक-दूसरे को दोष देते हैं, केंद्र राज्यों पर ठीकरा फोड़ता है, स्थानीय निकाय नागरिकों को इस संकट का जिम्मेदार बताते हैं, और नागरिक अपने भाग्य को कोसते हैं। समाधान अब भी है। बस इच्छाशक्ति चाहिए। निर्माण कार्यों की सख्त मॉनिटरिंग होनी चाहिए।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

बगरू होटल एण्ड रेस्टोरेन्ट (गेस्ट हाऊस)

स्वाद एवं क्वालिटी का एक मात्र स्थान (शुद्ध शाकाहारी)

- लंच, डिनर, ब्रेकफास्ट
- रूम सुविधा: ए/सी, नॉन ए/सी
- फैमेली के बैठने की उत्तम सुविधा
- पैकिंग सुविधा
- शांत वातावरण एवं अनुभवी स्टाफ
- सेन्टर पॉईन्ट, बगरू रीको + बगरू कस्बा+अजमेर रोड
- वाई-फाई फ्री पैलेस

भंवर सिंघला
भगवान सिंघला
9782900051
9950999947

11, सिंगला ब्रदर्स, लव-कुश नगर, न्यू रीको, इण्डस्ट्रीयल एरिया, बगरू

लीथल

प्रकाशन अवधि-प्रत्येक माह की 5 व 20 तारीख

कलर-ब्लैक एण्ड व्हाईट

विज्ञापन दरें:-

प्रथम पृष्ठ	:	45 रुपये प्रति सेन्टीमीटर
भीतरी पृष्ठ	:	36 रुपये प्रति सेन्टीमीटर
अन्तिम पृष्ठ	:	41 रुपये प्रति सेन्टीमीटर

नियम व शर्तें

लीथल विशेषांक रंगीन विज्ञापन दरे

होली, दीपावली, नववर्ष व अन्य

प्रथम पृष्ठ : 73 रुपये प्रति सेन्टीमीटर, भीतरी पृष्ठ : 47 रुपये प्रति सेन्टीमीटर

अंतिम पृष्ठ : 55 रुपये प्रति सेन्टीमीटर

विज्ञापन बुक कराने के लिए सम्पर्क करें:-95719-19059

सूचना

आप लीथल समाचार पत्र को अपने क्षेत्र की समस्या, समाचार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक गतिविधियों, लेख-कहानियाँ, चुटकलें, मूलभूत सुविधाओं की कमी के समाचार नि:शुल्क प्रकाशित करा सकते है।

सम्पर्क: ई-मेल mangilallithal@ yahoo.co.in पर भेजें।

या

95719-19059 WhatsApp करें।

हर साल 16 दिसंबर को मनाया जाता है विजय दिवस, जानिए इतिहास और महत्व

आज यानी की 16 दिसंबर को विजय दिवस मनाया जा रहा है। यह दिन भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम दिन है, जब देश के सामने पराजय ने अपने घुटने टेक दिए थे और भारतीय सैन्य बलों की संकल्पशक्ति ने विश्व के सामने अपना लोह मनवाया। 16 दिसंबर 1971 में भारत ने पाकिस्तान पर निर्णायक विजय प्राप्त की थी और बांग्लादेश के रूप में एक स्वतंत्र राष्ट्र अस्तित्व में आया था। यह दिन सिर्फ युद्ध को याद करने तक सीमित नहीं बल्कि भारतीय सेना की रणनीतिक कौशल, साहस और राष्ट्रहित के लिए किए गए सर्वोच्च बलिदान का जीवंत प्रमाण है।

इतिहास: बता दें कि भारत-पाकिस्तान युद्ध की जड़ें बंटवारे के बाद पूर्वी पाकिस्तान में पनप रहे राजनीतिक और सांस्कृतिक भेदभाव में थीं। वहां पर होने वाले नरसंहार, नागरिकों पर अत्याचार और मानवाधिकारों के उल्लंघन ने स्थिति को अधिक जटिल बना दिया था।

स्वतंत्रता की मांग: वहीं 26 मार्च 1971 को पूर्वी पाकिस्तान में स्वतंत्रता की मांग उठी। जिसके बाद पाकिस्तान ने उसको बलपूर्वक कुचलने का प्रयास किया। ऐसे में मानवीय आधार पर भारत ने बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया, जोकि युद्ध में बदल गया।

भारत-पाकिस्तान का युद्ध: औपचारिक रूप से 03 दिसंबर 1971 को युद्ध शुरू हुआ और मात्र 13 दिनों में इतिहास रच दिया गया। वहीं 16 दिसंबर को ढाका में भारतीय सेना और मुक्ति वाहिनी के सामने पाकिस्तानी सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया। करीब 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों का समर्पण विश्व सैन्य इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं में शामिल है।

बांग्लादेश को दिलाई स्वतंत्रता: देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में हुए इस युद्ध में भारत ने सैन्य और कूटनीतिक दोनों मोर्चों पर निर्णायक भूमिका निभाई। भारत ने न सिर्फ बांग्लादेश की आजादी में सहायता की बल्कि लाखों शरणार्थियों को सुरक्षित आश्रय दिया। इसी के उपलक्ष्य में हर साल 16 दिसंबर को विजय दिवस मनाया जाता है। इस दिन भारतीय सेना के शौर्य, नेतृत्व और बलिदान को नमन किया जाता है।

पाठकों से विनम्र निवेदन

लीथल, हिन्दी पाक्षिक समाचार पत्र

खरीद कर पढ़िये

प्रत्येक अंक का पैसा दीजिये

यह बात आपकी प्रतिष्ठा और आपके लीथल के बढ़ते कदमों से गहरा सम्बन्ध रखती है।

खरी बात यह है

आज तक जितने अखबार बंद हुए हैं
बिना पैसे दिए पढ़ने वाले अखबार प्रेमियों के कारण ही बंद हुए हैं

जिन्दा समाज वह है

जिसके बहुत सारे अखबार हो और अखबार तब ही जिंदा रहे हैं जब अखबार पढ़ने वाले सज्जन, सम्माननीय पाठकगण यानि अखबार प्रेमी, उन्हें खरीदकर पढ़ें।

अगर हमें लीथल को जिंदा रखना है तो खरीदकर पढ़ने की आदत बनाइये।

लीथल

जयपुर जिले में एवं बगरु क्षेत्र के सामाजिक, राजनैतिक, व्यापारिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में सर्वाधिक लोकप्रिय प्रमुख पाक्षिक समाचार पत्र

वार्षिक ग्राहक बनिये
वार्षिक शुल्क:100/- रुपये, विशेष सहयोग:1100 रुपये

निर्भीक, स्वस्थ पत्रकारिता को प्रोत्साहन देने हेतू आज ही अपना वार्षिक शुल्क/विशेष सहयोग नकद/डी.डी./मनीऑर्डर द्वारा शीघ्र भिजवाएं।

लीथल, कार्यालय, प्लाट नं. 86. शिव कॉलोनी, वृन्दावन विहार, मुकुन्दपुरा रोड़, भांकरोटा, जयपुर पिन-302026
सम्पर्क-9571919059

वन्यजीवों के हमला की 5 घटनाएं जिससे दहली दुनिया

नई दिल्ली। 2025 विदा होने को है और 2026 की ओर हम बढ़ चले हैं। पीछे मुड़कर देखें तो कुछ वाकयों ने हैरान किया, कुछ ने हंसी बिखेरी तो कुछ आंखों में आंसू का सबब बने। कुछ हादसे ऐसे हुए जो इंसानों और वन्य जीवों के बीच गहरी होती जा रही खाई को दर्शाते हैं। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से ऐसी खबरें आई जिसमें हाथी, बाघ, शेर और भालू तक ने इंसानों को अपना शिकार बनाया। ऐसी वारदातें जो रोंगटे खड़े करती हैं। केरल इस साल हाथियों के हमले से लगभग हर महीने सुर्खियों में रहा। 6 दिसंबर को ही पलक्कड़ जिले में जंगली हाथी के हमले में बाघों की गणना कर रहे एक वन्यकर्मी की मौत हो गई, जिसकी पहचान वन विभाग के चौकीदार कालीमुथु (52) के रूप में हुई। 21 सितंबर को हाथियों ने तो नहीं लेकिन एक बाघ ने हमला कर ओक्लाहोमा (यूएस) स्थित ह्यूगो के एक ट्रेनर रयान ईस्ले को मार डाला। शो मी टाइगर्स सर्कस और ग्रोवर पाइंस चिड़ियाघर के रयान इज्ले को कथित तौर पर उनके ही एक बाघ ने मार डाला, यह बाघ उनके टाइगर सप्लायर जो एग्जॉटिक का था। इज्ले से जुड़े कुछ विवाद भी हैं। पेटा ने अचानक बाघ के हमले के कारणों को तलाशा और अपनी खोज के आधार पर कहा कि रेयान बाघों को ट्रेंड करने के दौरान उन पर अत्याचार किया करते थे। जो के साथ कम करते हुए इन बाघों को जगह-जगह ले जाकर सर्कस

दिखाते थे। पेटा ने बताया था कि 2017 में एक बार बाघ को 31 बार मारने का मामला भी सामने आया था। वो अक्सर बाघों को घंटों पिजरों में बंद रखता था। बिग कैट्स अटैक का शिकार थाईलैंड के एक चिड़ियाघर का कर्मचारी भी बना।

11 सितंबर को सफारी वर्ल्ड बैंकॉक से गाड़ी चलाकर जा रहे विजिटर्स पर शेरों ने हमला कर दिया। यह 15 मिनट तक चला। वीडियो सोशल मीडिया पर दिखीं जो दहलाने वाली थीं। इनमें शेरों का झुंड एक शख्स पर भिड़ा पड़ा था। चिड़ियाघर का कर्मचारी, जो 20 सालों से सफारी वर्ल्ड बैंकॉक में काम कर रहा था, शेरों के हमले में मारा गया। 58 साल के जियान रंगखरसामी अपनी गाड़ी से बाहर निकले तो शेरों के शिकार बन गए। ऐसा ही कुछ 6 जुलाई को ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में घटा। डार्लिंग डाउन्स चिड़ियाघर में 50 पार महिला चिड़ियाघर में शेर को खाना खिलाते समय अपना हाथ खो बैठी। शेर ने उसके हाथ को अचानक मुंह में दबाया और कुछ पलों में अनहोनी हो गई। यह त्रासदियां हमें प्राकृतिक दुनिया की खूबसूरती और उसके अप्रत्याशित व्यवहार दोनों की दर्दनाक याद दिलाती है। पेटा मानता है कि वन्यजीवों के पास इंसानों का जाना कभी भी सुरक्षित नहीं होता है और जानवरों को मनोरंजन के साधन के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

गाजर के सेवन से त्वचा, आंखों और बालों को मिलता है चमत्कारिक लाभ

वैसे तो सभी फल और सब्जियां सेहत के लिए फायदेमंद हैं। मगर सर्दियों के मौसम में खाई जाने वाली सबकी पसंदीदा गाजर सेहत के लिए बेहद ही लाभकारी है। गाजर के फायदे जानने के लिए न्यूट्रिशनिस्ट से बात की। न्यूट्रिशनिस्ट का काम डाइट और पौष्टिक आहार के सेवन से जुड़ी सामान्य जानकारी देना होता है। गाजर के फायदों पर बात करते हुए कहा, गाजर को बहुत सारे तरीके से खाया जा सकता है। आप गाजर को पकाकर या सलाद के तौर पर भी खा सकते हैं। इसका सूप बनाकर भी लिया जा सकता है। जो लोग इसे सब्जी के तौर पर नहीं ले सकते, वह इसका हलवा भी खा सकते हैं। गाजर को सर्दियों में अपनी डाइट में जरूर शामिल करना चहिए, क्योंकि यह सेहत के लिए बेहद ही फायदेमंद होता है। गाजर में प्रचूर मात्रा में फाइबर पाया जाता है। कैलोरी की मात्रा इसमें बेहद कम होती है। जो लोग अपने वजन पर काम कर रहे हैं, उनके लिए गाजर एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इसमें विटामिन ए भी मौजूद होता है। जो भूख को कम करने का काम करता है। गाजर में मौजूद फाइबर और पोटेशियम के कारण यह दिल के लिए भी लाभकारी होता है। यह

ब्लड प्रेशर को भी सही रखने में मदद करता है। इसके अलावा, गाजर एंटी-एजिंग के प्रभाव को भी कम करने का काम करती है, क्योंकि इसमें भरपूर मात्रा में विटामिन ए और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं। आगे उन्होंने कहा, गाजर के नियमित सेवन से आपके शरीर को कई तरह का लाभ मिलता है। यह आपकी त्वचा, आंखें और बालों के लिए बेहद फायदेमंद है। यह इम्यून सिस्टम पर भी बेहतर तरीके से काम करता है। उन्होंने आगे बताया, गाजर में विटामिन सी भी प्रचूर मात्रा में पाया जाता है, जो इम्यूनिटी बढ़ाने में मदद करता है। गाजर सर्दियों के लिए एक खास विकल्प है। गाजर में मौजूद फाइबर पाचन तंत्र को बेहतर बनाता है। गाजर में मौजूद बीटा-कारोटीन आंखों के लिए फायदेमंद है। गाजर आपकी आंखों को इसकी वजह से सुरक्षा प्रदान करने का काम करता है।

हरसिद्धि माता का दिव्य दरबार, उज्जैन में 51 शक्तिपीठों में से एक, जहां होती है मनोकामनाएं पूरी

भारत की धरती पर शक्ति की उपासना का अपना विशेष महत्व होता है। पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक मां शक्ति के 51 शक्तिपीठ हैं। जिनमें से एक उज्जैन स्थित हरसिद्धि माता मंदिर है। यह मंदिर न सिर्फ अपनी धार्मिक मान्यता के लिए फेमस है। बल्कि यहां की आस्था और भक्ति से जुड़ी अनगिनत कहानियां भी इसको विशेष बनाती हैं। शिप्रा तट पर बसे इस मंदिर में हर समय भक्तों की भीड़ देखने को मिलती है। लेकिन नवरात्रि के मौके पर यहां का वातावरण अद्भुत और अलौकिक हो जाता है। तो आइए जानते हैं मां हरसिद्धि मंदिर से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों के बारे में...

पौराणिक मान्यता: धार्मिक मान्यता है कि जब भगवान शिव अपनी पत्नी सती के शव को लेकर ब्रह्मांड में घूम रहे थे। तब श्रीहरि विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के अंगों को काट दिया था। जहां-जहां मां सती के अंग गिरे, वहां-वहां शक्तिपीठों की स्थापना हुई। उज्जैन का हरसिद्धि माता मंदिर उन्हीं पवित्र स्थलों में से एक है। माना जाता है कि यहां पर मां सती की कोहनी गिरी थी। जिसकी वजह से यह स्थान शक्ति उपासना का महत्वपूर्ण केंद्र बना।

महत्व और स्वरूप: हरसिद्धि माता मंदिर प्राचीन स्थापत्य का बेहद सुंदर उदाहरण है। गर्भगृह में

विराजमान मां हरसिद्धि की प्रतिमा अत्यंत भव्य और दिव्य है। यहां पर मां अन्नपूर्णा और महालक्ष्मी की प्रतिमाएं विराजित हैं। मंदिर परिसर में स्थित दो विशाल दीप स्तंभ इसकी शोभा बढ़ाते हैं। नवरात्रि के मौके पर इन दीप स्तंभों में सैकड़ों दीपक प्रज्वलि होते हैं, तो दृश्य स्वर्गिक प्रतीक होता है। धार्मिक मान्यता है कि उज्जैन नगरी में रक्षा मां हरसिद्धि स्वयं करती हैं। विक्रमादित्य और अन्य प्राचीन शासकों ने इस मंदिर में पूजा-अर्चना की है। माना जाता है कि राजा विक्रमादित्य ने मां हरसिद्धि की पूजा-आराधना करके ही अद्वितीय पराक्रम प्राप्त किया था।

नवरात्रि में विशेष पूजा: नवरात्रि के मौके पर हरसिद्धि माता मंदिर का महत्व अधिक बढ़ जाता है। इन 9 दिनों में भक्त सुबह शाम विशेष पूजा, दुर्गा सप्तशती का पाठ और माता का भोग अर्पण करते हैं। गरबा और दुर्गा आरती की गूंज से पूरा वातावरण अधिक भक्तिमय हो जाता है। यहां पर विशेष रूप से कन्या पूजन का आयोजन किया जाता है। हजारों की संख्या में भक्त मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचते हैं। नवरात्रि के मौके पर मां का विशेष श्रृंगार किया जाता है। मां हरसिद्धि को लाल वस्त्र, स्वर्णाभूषण और फूलों से सजाया जाता है। भव्य आरती और दीप प्रज्वलन से सारा परिसर अलौकिक हो उठता है। नवरात्रि में हरसिद्धि मां की पूजा-अर्चना करने से जातक को धन, वैभव, शक्ति और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। **धार्मिक आस्था:** स्थानीय लोगों का मानना है कि मां हरसिद्धि श्रद्धालुओं की हर मनोकामना पूरी करती हैं। पारिवारिक सुख, व्यापार में उन्नति, संतान सुख और जीवन के संकटों से मुक्ति के लिए भक्त यहां पर नतमस्तक होते हैं। माना जाता है कि उज्जैन की महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग यात्रा तब तक पूर्ण नहीं मानी जाती है, जब तक भक्त हरसिद्धि माता के दर्शन न कर लें।

गले की समस्या में घरेलु नुस्खे से राहत पाएं

गला बैठना एक आम समस्या होती है, इसमें गले की आवाज असाधारण रूप से बदल जाती है। गला बैठने की समस्या अक्सर गला सूखने या गले में खुजली व जलन जैसी समस्याओं के साथ होती है। गला बैठने का सबसे मुख्य कारण जुकाम या साइनस संक्रमण होता है। ये समस्याएं दो हफ्तों के भीतर अपने आप ठीक हो जाती हैं। गला बैठने से बचाव करने के लिए डॉक्टर धूम्रपान छोड़ने, पेट में जलन (एसिडिटी) पैदा करने वाले खाद्य पदार्थ ना खाने, गर्म पेय पदार्थों का सेवन करने और अपनी आवाज को कुछ दिनों के लिए आराम देने की सलाह देते हैं। गला बैठने का इलाज करने के लिए इसका कारण बनने वाली समस्याओं का पता लगा कर उनका इलाज किया जाता है। यदि गला बैठने का इलाज ना किया जाए तो इससे गले में गंभीर संक्रमण हो सकता है। इसके अलावा गला बैठने से आवाज कम होना और बलगम वाली खांसी होने जैसी समस्याएं भी पैदा हो जाती हैं। अगर आप भी गले के बैठने के बाद पुन: अपनी आवाज़ को मधुर और सुरीली बनाना चाहतें हैं तो ज़रूर आजमायें ये घरेलू नुस्खे

* अदरक का रस 10 ग्राम ,निम्बू का रस 10 मिली और एक ग्राम सेंधा नमक मिलाकर दिन में तीन बार आहिस्ता -आहिस्ता पीने से आवाज ठीक होती है। * मुलेठी , आंवला, मिश्री प्रत्येक 2 ग्राम का काढा 50 मिली बनाकर पीने से गला बैठने में लाभ होता है। * आवाज सुरीली बनाने के लिए 10 ग्राम बहेड़ा की छाल को गोमूत्र में भावित कर चूसने से आवाज कोयल जैसी सुरीली हो जाती है। किसी चूर्ण को किसी द्रव पदार्थ में मिलाकर सूख जाए तब तक घोटना-इसे भावित करना कहते हैं।

* जामुन की गुठलियाँ को पीसकर शहद में मिलाकर गोलियां बनालें एक गोली दिन में चार बार चूसें। गले की आवाज बैठने में हितकारी उपाय है। खांसी में भी लाभकारी है। भाषण देने वालों और गायकों के लिए यह नुस्खा अमृत तुल्य है। आवाज का भारीपन भी ठीक हो जाता है। * सोते समय एक ग्राम मुलहठी की छोटी सी गांठ मुख में रखकर कुछ देर चबाते रहे। फिर मुंह में रखकर सो जाए। सुबह तक गला साफ हो जायेगा। मुलहठी चूर्ण को पान के पत्ते में रखकर लिया जाय तो और भी अच्छा रहेगा। इससे सुबह गला खुलने के साथ-साथ गले का दर्द और सूजन भी दूर होती है। * जिन व्यक्तियों के गले में निरंतर खराश रहती है या जुकाम में एलर्जी के कारण गले में तकलीफ बनी रहती है, वह सुबह-शाम दोनों वक्त चार-पांच मुनक्का के दानों को खूब चबाकर खा लें, लेकिन ऊपर से पानी ना पिएं। दस दिनों तक लगातार ऐसा करने से लाभ होगा। * कच्चा सुहागा आधा ग्राम मुंह में रखें और उसका रस चुसते रहें। दो तीन घण्टों मे ही गला बिलकुल साफ हो जाएगा। * रात को सोते समय सात काली मिर्च और उतने ही बताशे चबाकर सो जायें। बताशे न मिलें तो काली मिर्च व मिश्री मुंह में रखकर धीरे-धीरे चूसते रहने से बैठा गला खुल जाता है। * 1 कप पानी में 4-5 कालीमिर्च एवं तुलसी की थोंडी सी पत्तियों को उबालकर काढ़ा बना लें और इस काढ़े को पी जाए। * गुनगुने पानी में नमक मिला कर दिन में दो-तीन बार गरारे करें। गरारे करने के तुरन्त बाद कुछ ठंडा न लें। गर्म चाय या गुनगुना पानी पिएं जिससे गले को आराम मिलेगा। * गले में खराश होने पर सुबह-सुबह सौंफ चबाने से बंद गला खुल जाता है।

कार बेचते-खरीदते समय क्या सावधानी बरतें?

जानें वाहन बेचते वक्त क्या सावधानी रखें। एवं वाहन बेचने-खरीदने में किनका ध्यान रखें?

दस्तावेज: बेचने वाले को वाहन का मूल आरसी देना चाहिए। बेचने और खरीदने वाले-दोनों पक्षों द्वारा परिवहन सेवा पोर्टल पर ऑनलाइन या संबंधित आरटीओ के फॉर्म 29 एवं फॉर्म 30 भरना चाहिए। मोटर व्हीकल एक्ट 1988 की धारा 50 के तहत ये जरूरी हैं। बिक्री का प्रमाण (सेल एग्रीमेंट) रखें।

मालिक का नाम आरसी में ट्रांसफर होना जरूरी है। यह ट्रांसफर नहीं हुआ, वाहन का दुरुपयोग या दुर्घटना होती है या वाहन का चालान, ऋण आदि बनता है, तो विक्रेता रिकॉर्ड में मालिक होने से उत्तरदायी माना जाएगा।

ट्रांसफर कब करना चाहिए?

सामान्य तौर पर वाहन बेचने के बाद ट्रांसफर का आवेदन राज्य-आरटीओ को समय पर करना अनिवार्य है। ट्रांसफर 30 दिन के भीतर होना चाहिए।

बेचने वाले (सेलर) को क्या करना चाहिए?

बिक्री के बाद आरटीओ को सूचना देना कि वाहन बेच दिया गया है। बेहतर होगा कि हस्तांतरण (फॉर्म 29 तथा फॉर्म 30) की एक प्रति अपने पास रखें।

गूगल की क्वांटम क्रांति, 13,000 गुना तेज एल्गोरिदम से खुलेंगे विज्ञान के नए रहस्य

टेक्नोलॉजी की दुनिया में एक और क्रांतिकारी कदम उठाते हुए गूगल ने क्वांटम कंप्यूटिंग के क्षेत्र में बड़ा ब्रेकथ्रू हासिल किया है। कंपनी ने अपने 'विलो (Willow)' क्वांटम कंप्यूटिंग चिप पर नया एल्गोरिदम क्वांटम इकोज विकसित किया है, जो पारंपरिक सुपरकंप्यूटरों से 13,000 गुना तेज गति से काम करता है। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने इसे वेरिफायबल क्वांटम एडवांटेज बताया है – यानी ऐसा क्वांटम लाभ जिसे स्वतंत्र रूप से प्रमाणित किया जा सकता है। यह खोज आने वाले वर्षों में दवाओं की खोज और नई सामग्री विज्ञान जैसे क्षेत्रों में नई संभावनाओं के द्वार खोलेगी, जिससे वैज्ञानिक प्रयोगों की गति और सटीकता दोनों में तेजी आएगी।

क्या है गूगल का क्वांटम इकोज?

सुंदर पिचाई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X (पूर्व में ट्विटर) पर जानकारी साझा करते हुए बताया कि क्वांटम इकोज एल्गोरिदम न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस की तकनीक का उपयोग करता है, जिससे यह अणुओं के भीतर परमाणुओं की परस्पर क्रिया का विश्लेषण कर सकता है। गूगल की Willow चिप पर चलते हुए यह एल्गोरिदम दुनिया के सबसे तेज सुपरकंप्यूटरों पर चलने वाले श्रेष्ठ एल्गोरिदम की तुलना में 13,000 गुना तेजी से परिणाम देता है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, गूगल की यह क्वांटम तकनीक अगले पांच वर्षों में व्यावहारिक रूप से उपयोग में लाई जा सकेगी, जिससे विज्ञान और उद्योग के कई क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

क्वांटम कम्प्यूटिंग: जटिल समस्याओं का सरल समाधान: गूगल का विलो क्वांटम चिप क्यूबिट्स (Qubits) के माध्यम से काम करता है , जो क्वांटम कंप्यूटिंग की मूल इकाई हैं। पारंपरिक बिट्स जहां केवल 0 और 1 की स्थिति में रह सकते हैं, वहीं क्यूबिट्स दोनों स्थितियों में एक साथ रह सकते हैं, जिससे किसी भी जटिल गणना को बेहद तेजी और सटीकता से हल किया जा सकता है। गूगल के वैज्ञानिकों का मानना है कि क्वांटम इकोज जैसे एल्गोरिदम भविष्य में नए अणुओं, दवाओं, सोलर एनर्जी सिस्टम्स और उन्नत धातुओं के विकास में अहम भूमिका निभाएंगे। **प्रकृति की जटिल प्रणालियों को समझने की नई दिशा:** गूगल ने अपने ब्लॉग पोस्ट में बताया कि क्वांटम इकोज एल्गोरिदम को चलाकर कंपनी ने पहली बार सत्यापन योग्य क्वांटम लाभ प्रदर्शित किया है। यह एल्गोरिदम अणुओं, चुंबकों और ब्लैक होल जैसी प्राकृतिक प्रणालियों की संरचना और गतिशीलता को समझने में सक्षम है। इसका अर्थ यह है कि अब वैज्ञानिक उन सूक्ष्म प्रणालियों को मॉडल कर सकेंगे जिन्हें आज तक केवल सिद्धांतों के माध्यम से समझने की कोशिश की जाती रही है। **भविष्य की कंप्यूटिंग का नया अध्याय:** गूगल की यह उपलब्धि केवल एक तकनीकी माइलस्टोन नहीं, बल्कि मानव बुद्धि और क्वांटम विज्ञान के संगम का प्रतीक है। क्वांटम इकोज एल्गोरिदम के माध्यम से अब हम ब्रह्मांड की सूक्ष्मतम परतों को समझने के और करीब पहुंच चुके हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि आने वाले दशक में क्वांटम कंप्यूटिंग दवा निर्माण, ऊर्जा उत्पादन, और सामग्री अनुसंधान के पूरे ढांचे को बदलकर रख देगी।

अहंकार से ऊपर उठिए

रिश्तों की खूबसूरती सिर्फ मुस्कुराहट और साथ में बिताए लम्हों से नहीं, बल्कि उन छोटी-छोटी गलतियों को समझने और स्वीकार करने से भी बनती है। हम इंसान हैं, गलतियां होना स्वाभाविक है, लेकिन असली ताक़त इस बात में है कि हम अपनी गलती मानकर माफ़ी मांग सकें। माफ़ी मांगना कभी भी आपके सम्मान को कम नहीं करता, बल्कि ये आपके व्यक्तित्व को और ऊँचा बना देता है। जब आप किसी को दिल से सॉरी कहते हैं, तो सामने वाला सिर्फ आपकी गलती ही नहीं, बल्कि आपके सच्चे दिल और ईमानदार इरादों को भी महसूस करता है। यह छोटे-छोटे अहंकार से ऊपर उठकर रिश्तों को और मजबूत करने का रास्ता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में रिश्तों की डोर अक्सर छोटी-छोटी बातों पर टूट जाती है। ऐसे में सॉरी और थैंक यू जैसे साधारण से शब्द रिश्तों में नई जान डाल सकते हैं।

सोचिए, क्या अहमियत ज्यादा बड़ी है या वो रिश्ता जिसमें प्यार, भरोसा और अपनापन है..? इसलिए हमेशा याद रखिए अपनी गलती मान लेना कमजोरी नहीं, बल्कि परिपक्वता और महानता की पहचान है। माफ़ी मांगकर आप खुद को छोटा नहीं करते, बल्कि दूसरों की नज़रों में और भी बड़े हो जाते हैं।

गौ सेवा हेतु विनम्र अपील

सम्मानीय
पाठकों, परम गौ भक्तजनों, धर्मात्मा सज्जनों
सादर सप्रेम, हरि स्मरण

आप सभी को विदित है कि श्रीरामदेव गौशाला (चैतन्य धाम) अठमोरिया की ढ़ाणी, अजमेर रोड, बगरू में परम पूजनीय नारायण दास जी महाराज के आशीर्वाद एवं गौ-भक्तों के सहयोग से गौशाला सन् 2000 से संचालित है। गौशाला में लगभग 2000 गायें (पशुधन) गौवंश आश्रित एवं संरक्षित है। जिनके पालन-पोषण के लिये प्रतिदिन हरा चारा, बांट, गुड़, सूखा चारा, पानी चिकित्सक चिकित्सा सुविधा हेतु तथा कई गौ सेवक (ग्वाले) गौ सेवा में नियमित तत्पर है। तात्पर्य यह है कि प्रतिदिन गौ सेवार्थ सामग्री क्रय करने के लिये कितना व्यय होता हे, जिसकी प्राप्ति का स्त्रोत आप सभी उदारमन गौभक्त ही है। गत 22 वर्षों से विभिन्न शहरों, कस्बों, गांवों, ढ़ाणियों से गौभक्त धर्मात्मा गौ सेवा के लिये उदार भाव से सहयोग करते आ रहे हैं तभी तो गौ वंश के प्राणों की रक्षा हो रही है। गौशाला में पधारे गौभक्तों ने पूज्या गौमाता का अमोध आशीर्वाद भी प्राप्त किया है। परम पूजनीय नारायणदास जी महाराज के आशीर्वाद और आपकी उदारता के परिणामस्वरूप ही रामदेव गौशाला में पिछले कई सालों से प्रत्येक अमावस्या को सायंकालीन गौ सेवा हेतु अमावस्या भगवान नाम संकीर्तन होता है। जिसमें प्रयोजित रचनात्मक एवं सृजनात्मक, गौ सेवा महाअभियान जिसमें स्थानीय क्षेत्र के गौभक्त तथा गुलाबी नगरी के गौभक्त के अलावा कई गौभक्त गौ सेवा हेतु सपरिवार पधारते हैं इतना ही नहीं अपने कर कमलों से गौ सेवा करते हैं। यह महाभियान दूर-दूर तक पहुंच चुका है। इस अमावस्या भगवान नाम संकीर्तन महाभियान से गौ रक्षा तथा गौ भक्ति की भावनाओं का पुनजार्गरण हो रहा है।

अत: आप सभी धर्मात्मा गौ भक्तों (व्यापारियों बन्धुओं, कृषकों, उद्यमियों, जनप्रतिनिधियों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, संस्थाओं, सरकारी कर्मचारियों या अन्य कोई भी रोजगार करने वाले बन्धुओं माताएं, बहिनों, विद्यार्थियों) से विनम्र प्रार्थना है कि आप प्रतिदिन एक रुपया या अधिक उदारतापूर्वक अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार गौ सेवा हेतु श्रीरामदेव गौशाला (चेतन्यधाम) से सहयोग करें, जिससे गौ सेवा का सर्व कल्याणकारी मनोरथ पूर्ण हों।

हमारे ठाकुर जी (रामजी) को पूर्ण विश्वास है कि परमात्मा आप सब को निरन्तर गौ सेवा करते रहने की समझ एवं शक्ति प्रदान करें। **निवेदनकर्ता: मांगीलाल शर्मा, सम्पादक, लीथल**

श्रीरामदेव गौशाला (चैतन्य धाम),
अजमेर रोड, अठमोरिया, बगरू, जयपुर

गौशाला आप सभी गौ भक्तों के सहयोग से संचालित की जा रही है

(गौ सेवा से सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं)

व्यवस्थापक-भंवर लाल

सम्पर्क: 9929959870

सर्दी में इम्यूनिटी और गर्माहट के लिए बनाएं गोंद-गुड़ के लड्डू

सर्दियों के मौसम ज्यादातर घरों में गोंद के लड्डू जरुर बनाएं जाते हैं। ठंड से बचने के लिए यह लड्डू काफी मददगार साबित होते हैं। इस मौसम में शरीर को स्वाभाविक रूप से गर्मी, ताकत और पोषण देने के लिए गोंद के लड्डू जरुर खाएं जाते हैं। यह गोंद-गुड़ के लड्डू पारंपरिक मिठाई है, जिसे लोग अपने घर में सर्दियों के दौरान जरुर बनाते हैं। इसके सेवन से शरीर को पर्याप्त न्यूट्रिशन प्राप्त होता है। दादी-नानी की रसोई में पीढ़ियों से चली आ रही ये पौष्टिक लड्डू न सिर्फ स्वादिष्ट होती हैं, बल्कि शरीर को सर्दी की ठंड से भी बचाते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में भी मदद करती हैं। वैसे इन्हें प्यार से सर्दियों के लड्डू भी कहा जाता है, जो खास तौर पर ठंड के महीनों के लिए बनाए जाते हैं।

गोंद-गुड़ के लड्डू के लिए सामग्री: गोंद: 100 ग्राम, गुड़: 250 ग्राम, गेहूं का आटा: 200 ग्राम, देसी घी: 200 ग्राम, बादाम: 50 ग्राम, काजू: 50 ग्राम, कद्दूकस किया हुआ नारियल: आधा कप, इलायची पाउडर: 1 छोटा चम्मच, खसखस (वैकल्पिक): 2 बड़े चम्मच

गोंद-गुड़ के लड्डू कैसे बनाएं? एक कड़ाही में थोड़ा सा घी गरम करें और उसमें गोंद डालें। मध्यम आंच पर तब तक भूनें जब

तक वह फूलकर कुरकुरा और सफेद न हो जाए, लगभग पॉपकॉर्न जैसा। इसे निकालकर ठंडा होने दें। उसी कढ़ाई में थोड़ा और घी डालें और धीमी आंच पर गेहूं का आटा भून लें। इसे लगातार चलाते रहें जब तक कि यह सुनहरा और खुशबूदार न हो जाए। इससे लड्डुओं को उनका असली, घर का बना स्वाद मिलता है। बादाम और काजू को हल्का सा मसल लें। एक छोटी चम्मच घी में 1-2 मिनट तक भूनें ताकि वे कुरकुरे रहें। कद्दूकस किया हुआ नारियल भी हल्का सा भून लें। कढ़ाई में 3-4 चम्मच घी डालें और उसमें गुड़ तोड़कर डालें। धीमी आंच पर धीरे-धीरे पिघलाएं। ज्यादा न पकाएं, बस इतना पिघलाएं कि मिश्रण में अच्छी तरह मिल जाए। पिघले हुए गुड़ में भुना हुआ आटा, गोंद, मेवे, नारियल और इलायची पाउडर डालें। अच्छी तरह मिलाएं ताकि गुड़ सभी सामग्रियों पर समान रूप से मिल जाए। अब मिश्रण के गरम रहते ही, अपनी हथेलियों पर घी लगाकर अपनी पसंद के आकार के लड्डू बना लें,उन्हें ठंडा होने दें। चाहें तो ऊपर से खसखस छिड़ककर स्वादिष्ट बना सकते हैं।

इन लड्डुओं के खाने से मिलते हैं ये फायदे: रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में मदद करें। सर्दी में होने वाली खांसी, जुकाम और बदन दर्द जैसी बीमारियों से राहत दिलाएं। ऊर्जा बढ़ाएं और थकान से लड़ें। बच्चे को जन्म दे चुकी, महिलाओं के लिए यह लड्डू विशेष रूप से लाभकारी है। बच्चों में स्टेमिना और ताकत बढ़ाएं।

व्यापारियों के लिए खुश खबरी

4100/- में 3 x10 से.मी. साईज में 1 वर्ष तक ब्लैक/व्हाईट विज्ञापन बुक करवाये

एक वर्ष में 24 बार विज्ञापन प्रकाशित होगा। सम्पर्क- 95719-19059

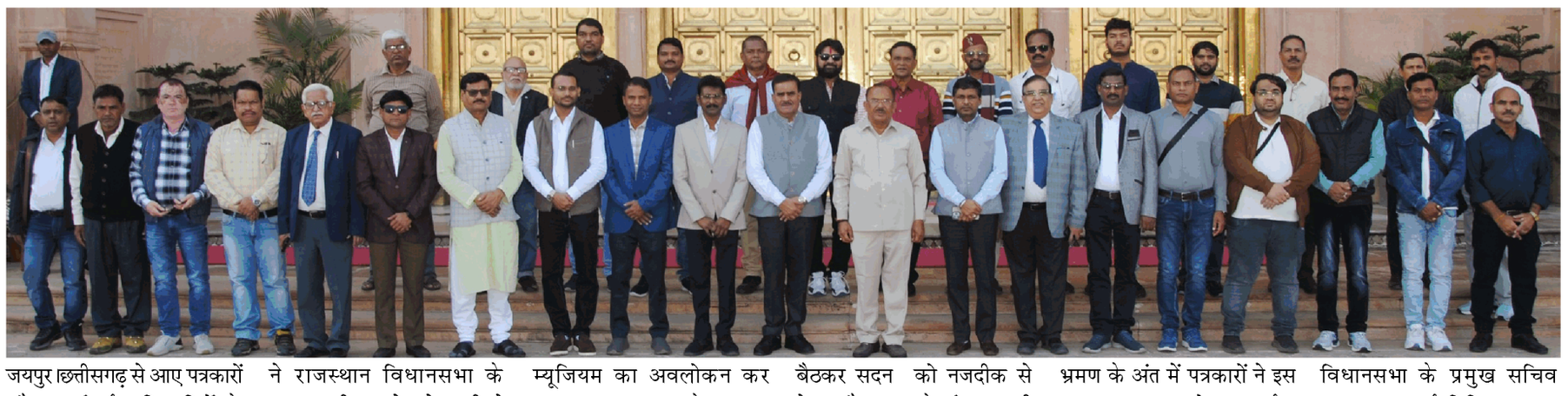

छत्तीसगढ़ के पत्रकारों और जनसंपर्क अधिकारियों के दल का राजस्थान विधानसभा का दौरा – विधानसभा अध्यक्ष से की शिष्टाचार भेंट–राजस्थान के इतिहास और संसदीय परंपराओं से हुए रूबरू

जयपुर।छत्तीसगढ़ से आए पत्रकारों और जनसंपर्क अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने अपने शैक्षणिक एवं अध्ययन भ्रमण के अंतर्गत मंगलवार को जयपुर में राजस्थान विधानसभा का दौरा किया। इस अवसर पर पत्रकारों ने राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी से भेंट कर लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका पर संक्षिप्त संवाद किया तथा उनके साथ सामूहिक फोटो भी खिंचवाई। पत्रकारों के दल ने विधानसभा परिसर स्थित म्यूजियम का अवलोकन कर राजस्थान राज्य के गठन, लोकतांत्रिक परंपराओं तथा विधानसभा के गौरवशाली इतिहास की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। भ्रमण के दौरान पत्रकारों ने विधानसभा की दर्शक दीर्घा में बैठकर सदन को नजदीक से देखा और सदन के संचालन की प्रक्रिया के बारे में जानकारी हासिल की। अधिकारियों द्वारा संसदीय कार्यप्रणाली, विधायी प्रक्रियाओं एवं सदस्यों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया। भ्रमण के अंत में पत्रकारों ने इस अध्ययन यात्रा को ज्ञानवर्धक बताते हुए कहा कि इससे संसदीय व्यवस्था की समझ और अधिक मजबूत हुई है, जो उनके पत्रकारिता कार्य में सहायक सिद्ध होगी। इस अवसर पर राजस्थान विधानसभा के प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा, विशिष्ठ सहायक के. के. शर्मा, परामर्शदाता गोपेंद्र नाथ भट्ट, छत्तीसगढ़ जनसंपर्क विभाग के संयुक्त निदेशक जितेंद्र नागेश, उप निदेशक राहुल सोन, सहायक निदेशक मनोज कुमार सिंह, सहायक निदेशक रमेश भार्गव तथा सहायक जनसंपर्क अधिकारी ओम प्रकाश डहरिया उपस्थित थे।

राजीविका मुख्यालय में विशेष स्वच्छता अभियान का आयोजन

जयपुर (का.सं.)।राजस्थान सरकार के वर्तमान कार्यकाल के दो वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत मंगलवार को राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद् (राजीविका) के जयपुर स्थित मुख्यालय में विशेष स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। इस स्वच्छता अभियान का नेतृत्व राजीविका की स्टेट मिशन डायरेक्टर श्रीमती नेहा गिरि द्वारा किया गया। अभियान में विभाग के समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए कार्यालय परिसर के विभिन्न अनुभागों और कक्षों की गहन साफ-सफाई की, जिससे स्वच्छ, स्वस्थ एवं सकारात्मक कार्य वातावरण का निर्माण हुआ।

अभियान के दौरान स्टेट मिशन डायरेक्टर द्वारा प्रत्येक अनुभाग एवं कक्ष का व्यक्तिगत निरीक्षण किया गया। उन्होंने कर्मचारियों द्वारा किए गए स्वच्छता प्रयासों पर संतोष व्यक्त करते हुए उनकी सक्रिय सहभागिता की सराहना की।

इस अवसर पर श्रीमती नेहा गिरि ने कहा कि स्वच्छता केवल विशेष अभियानों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि इसे नित्य, साप्ताहिक एवं मासिक दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि निरंतर स्वच्छता प्रयासों से माननीय प्रधानमंत्री एवं माननीय मुख्यमंत्री द्वारा आरंभ किए गए स्वच्छता अभियान को वास्तविक रूप से साकार किया जा सकता है। राजीविका परिवार ने इस विशेष अभियान के माध्यम से यह संदेश दिया कि स्वच्छता एक सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसे अपनाकर ही स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है।

पुलिस मुख्यालय में स्वच्छ कार्यालय अभियान सफल– डीजीपी ने थामी झाड़ू, अधिकारी भी हुए प्रोत्साहित

जयपुर (का.सं.)।राजस्थान सरकार के सफल दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में पुलिस मुख्यालय में मंगलवार को विशेष स्वच्छ कार्यालय अभियान का आयोजन किया गया। यह अभियान सुबह 10 बजे से 11 बजे तक एक घंटे चला, जिसका उद्देश्य स्वच्छ, स्वस्थ और अनुशासित कार्य वातावरण सुनिश्चित करना था। इस पहल की सबसे खास बात यह रही कि महानिदेशक पुलिस श्री राजीव कुमार शर्मा ने स्वयं अधिकारियों के साथ झाड़ू थामकर सफाई में सक्रिय रूप से भाग लिया। डीजीपी शर्मा की इस सक्रिय सहभागिता ने पुलिस मुख्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों में नया उत्साह भर दिया। डीजीपी को हाथों में झाड़ू थामा देखकर अधिकारी और कर्मचारी भी उनके साथ हो लिए और एक घंटे तक अपने- अपने कार्यालय की सफाई की।

एडीजी स्तर के अधिकारियों ने किया निरीक्षण –डीजीपी ने विशेष स्वच्छता अभियान को सार्थक करने की दृष्टि से न सिर्फ पुलिस मुख्यालय के द्वितीय तल पर स्वयं निरीक्षण किया अपितु एडीजी स्तर के अधिकारियों को मुख्यालय के अन्य तलों पर स्थित कार्यालय कक्षों में निरीक्षण की जिम्मेदारी भी दी। इन अधिकारियों ने अपराह्न 3 बजे बाद निरीक्षण कर न केवल स्वच्छता सुनिश्चित की, बल्कि कार्यालयों के रखरखाव और कार्यक्षमता का भी गहन आकलन किया। ग्राउण्ड और प्रथम तल पर एडीजी आयोजना, आधुनिकीकरण और कल्याण डॉ. प्रशाखा माथुर, तृतीय तल पर डीजी कानून एवं व्यवस्था श्री संजय अग्रवाल, चतुर्थ तल पर डीजी प्रशिक्षण एवं यातायात, श्री अनिल पालीवाल, पाँचवे तल पर एडीजी सतर्कता श्री एस. सेंगाथिर, छठे तल पर एडीजी इंटेलीजेंस श्री प्रफुल्ल कुमार और सांतवे तल एडीजी पुलिस हाउसिंग, श्री भूपेन्द्र साहू ने निरीक्षण किया। निरीक्षण उपरांत डीजीपी ने संबंधित अधिकारियों से निरीक्षण रिपोर्ट लेकर संबंधित अधिकारियों को कार्यालय को वर्ष भर स्वच्छ रखने के निर्देश दिए और स्वच्छता को आदत में परिवर्तित करने की बात कही। मुख्यालय के निर्देश पर यह अभियान केवल पीएचक्यू तक सीमित नहीं रहा बल्कि राज्यभर की सभी पुलिस इकाइयों में अनिवार्य सहभागिता के साथ संचालित किया गया, जिसके माध्यम से समूचे पुलिस बल को स्वच्छ, स्वस्थ और अनुशासित कार्य वातावरण का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया।

राज्य सरकार द्वारा दो वर्ष में किए गए ऐतिहासिक कार्यों एवं उपलब्धियों की विस्तार से दी जानकारी

जयपुर (का.सं.)। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने वर्तमान राज्य सरकार के दो वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने के उपलक्ष्य पर अलवर में '2 साल- नव उत्थान-नई पहचान, बढ़ता राजस्थान-हमारा राजस्थान' थीम पर आधारित तीन दिवसीय जिला विकास प्रदर्शनी का सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में फीता काटकर शुभारम्भ किया एवं राज्य सरकार की उपलब्धियों एवं कार्यो पर आधारित जिला विकास पुस्तिका का विमोचन किया। इस दौरान जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला सहित प्रबुद्ध व्यक्तियों एवं जनप्रतिनिधिगणों मौजूद रहे। वन राज्य मंत्री ने प्रेस ब्रिफिंग में राज्य सरकार की दो वर्ष की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अतिथियों ने विकास प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में विगत दो वर्ष में विभिन्न विभागों द्वारा फ्लैगशिप तथा जनकल्याणकारी योजनाओं की उपलब्धियों एवं नवाचारों को प्रदर्शित किया गया है। संजय शर्मा ने राज्य सरकार के दो वर्ष के सफलतम कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन 'विकसित भारत 2047' की परिकल्पना को साकार करते हुए प्रदेश के ऊर्जावान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में राज्य सरकार राजस्थान के चहुंमुखी विकास के संकल्प को साकार कर रही है। उन्होंने कहा कि विगत दो वर्ष में सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य किए गए है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा 2024-25 एवं 2025-26 में प्रदेश को विकास की ऐतिहासिक सौगातें दी हैं, जिनमें अधिकांशत: घोषणाएं क्रियान्वित की जा चुकी है। साथ ही प्रगतिरत बजट घोषणाओं की प्रभावी मॉनिटरिंग करते हुए उन्हें अमलीजामा पहनाने की दिशा में निरन्तर काम किया जा रहा है। वन राज्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा अलवर को दोनों बजटों में विकास की ऐतिहासिक सौगाते दी हैं।

राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाओं के प्रति दिख रहा उत्साह

जयपुर (का.सं.)। राज्य सरकार के कार्यकाल के शानदार दो वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर जयपुर स्थित जवाहर कला केन्द्र में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की ओर से 15 दिसम्बर से आयोजित राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में महिला एवं बाल विकास विभाग की स्टॉल पर योजनाओं की जानकारी लेने के लिए विजिटर्स की ओर से अच्छा उत्साह दिखाया जा रहा है। महिला बाल विकास विभाग (निदेशालय समेकित बाल विकास सेवाएं और महिला अधिकारिता) की स्टॉल पर आम जन को विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। जिसमें लाडो प्रोत्साहन योजना' के तहत अब तक 4 लाख 60 हजार बालिकाएं लाभान्वित हो चुकी है। इसी प्रकार मुख्यमंत्री अमृत आहार योजना के अंतर्गत आंगनबाड़ी केंद्रों पर प्रतिदिन आने वाले 3 से 6 वर्ष के लगभग 16 लाख बच्चों को स्किम्ड मिल्क पाउडर निर्मित ताजा गरम दूध सप्ताह में पांच दिन दिया जाने की जानकारी दी जा रही है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में जिसमें देय राशि बढ़ाकर 5 हजार से 6 हजार 500 रुपये की गई है। अब तक 9 लाख 92 हजार गर्भवती महिलाओं को 531 करोड़ रुपये की राशि प्रदान की जा चुकी है। वहीं दूसरी बार बच्चे के जन्म पर मुख्यमंत्री मातृत्व पोषण योजना के तहत 5 लाख से अधिक लाभार्थियों को लगभग 170 करोड़ रुपये का लाभ दिए जाने की जानकारी भी प्रदान की गई।

प्रदर्शनी में आंगनबाड़ी केंद्रों पर प्रदान की जा रही पोषाहार, शाला पूर्व शिक्षा,स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा के अतिरिक्त अन्य जानकारियां भी प्रदान की गई।

जयपुर में 5.36 लाख वोटर्स के नाम सूची से बाहर: 1.90 लाख वोटर्स नहीं करा सके मैपिंग

जयपुर (का.सं.)।राजस्थान में वोटर लिस्ट के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी हो गई। जयपुर जिले में 17 विधानसभा क्षेत्र में 5.36 लाख से ज्यादा लोगों के नाम (11.12 फीसदी) इस सूची से हटाए गए हैं। इनके अलावा 1.90 लाख नाम ऐसे हैं, जो वर्ष 2002 की वोटर सूची से अपना या माता-पिता के नाम की मैपिंग नहीं करवा पाए हैं। इन वोटर्स को सूची में तो जगह दी है, लेकिन निर्वाचन आयोग अब इनसे 12 दस्तावेज में से एक मांगेगा, जो ये साबित करेंगा कि ये इस देश के नागरिक हैं।

एब्सेंट, शिफ्ट होने वाले या डेथ लोगों के नाम कटे

जयपुर जिला निर्वाचन शाखा की तरफ से तैयार ड्राफ्ट सूची के मुताबिक 5 लाख 36 हजार 276 वोटर ऐसे हैं, जो या तो ?अपनी जगह से शिफ्ट हो गए हैं या उनकी डेथ हो गई। इसके अलावा कुछ ऐसे भी वोटर हैं, जिनका न तो घर मिला और न ही वे खुद घर पर मिले हैं। इन वोटर्स को ्स्ठ (एब्सेंट, शिफ्ट, डेथ) सूची में डालते हुए, इनके नाम ड्राफ्ट सूची से हटाए गए हैं। इन लोगों को अब अपनी आपत्तियां दर्ज करवाने के लिए 15 जनवरी तक का समय दिया गया है।

करीब 4 फीसदी नहीं करवाए पाए मैपिंग

इनके अलावा 1 लाख 90 हजार 22 लोग (करीब 3.94) ऐसे हैं, जिनका खुद का या उसके माता-पिता का नाम वर्ष 2002 की वोटर लिस्ट (मतदाता सूची) में नहीं मिल रहा। ये वोटर्स नो-मैपिंग लिस्ट में आए हैं। ऐसे मतदाताओं को अब अपना नाम वोटर लिस्ट में कायम रखने के लिए या तो वर्ष 2002 की वोटर लिस्ट में नाम दिखाना होगा। वरना निर्वाचन आयोग की ओर से बताए गए 12 दस्तावेजों में से किसी एक को देना पड़ेगा। इसके लिए इन्हें 7 फरवरी 2026 तक का समय दिया गया है।

मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र से 16.46 फीसदी वोटर्स के नाम कटे: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विधानसभा क्षेत्र सांगानेर से 61 हजार 674 (16.46 फीसदी) वोटर्स के नाम कटे हैं, जबकि 24 हजार 465 वोटर्स (6.53 फीसदी) ऐसे हैं, जो मैपिंग नहीं करवाए पाए हैं। स्ढ्ढक्रसे पहले इस विधानसभा क्षेत्र में कुल 3 लाख 74 हजार 735 वोटर्स थे।

आज से दे सकेंगे आपत्तियां

ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी होने के बाद जिन लोगों के नाम इस ड्राफ्ट सूची में नहीं हैं या जिन्हें कोई आपत्ति है, वे आज से संबंधित रिटर्निंग ऑफिसर के यहां आपत्तियां दर्ज करवा सकेंगे। ये आपत्तियां 16 जनवरी तक दर्ज करवाई जा सकेगी। इन आपत्तियों पर नोटिस जारी कर सुनवाई और वेरिफिकेशन कर फैसला किया जाएगा।

जयपुर में 42.87 लाख मतदाता बचे: जयपुर की 17 विधानसभा में SIR शुरू करने से पहले कुल 48 लाख 23 हजार 379 वोटर्स थे। स्ढ्ढक्रकी प्रक्रिया पूरी होने के बाद इनमें से ्स्ठ प्रक्रिया के तहत 5 लाख 36 हजार 276 वोटर्स के नाम सूची से बाहर किए गए। इस संशोधन के बाद अब ड्राफ्ट मतदाता सूची में 42 लाख 87 हजार 103 मतदाता रह गए हैं।

सबसे ज्यादा सिविल लाइंस से नाम कटे, चौमूं में सबसे कम: विधानसभावार स्थिति देखें तो सबसे ज्यादा वोटर्स सिविल लाइंस विधानसभा क्षेत्र से हटाए गए हैं। यहां कुल 2 लाख 49 हजार 187 कुल वोटर्स थे, जिनमें से 49 हजार 474 वोटर्स (19.85 फीसदी) के नाम ASD के तहत सूची से बाहर किए गए हैं। जबकि सबसे कम चौमूं विधानसभा से वोटर्स बाहर हुए हैं।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन पशुपालकों की आय बढ़ाने का प्रभावी माध्यम: निदेशक

जयपुर (का.सं.)। पशुपालन विभाग द्वारा राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन मंगलवार को आगरा रोड स्थित राजस्थान राज्य पशुधन प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान में किया गया। कार्यशाला में प्रदेश के सभी जिलों से 150 संभागियों ने भाग लिया जिसमें राष्ट्रीय पशुधन से जुड़े विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किए जाएंगे।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ अरुण तोमर ने कहा कि राष्ट्रीय पशुधन मिशन हिंदुस्तान की आवश्यकता है। जिसे पशुपालन के क्षेत्र में बड़े उद्यमी तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई है। पशुपालन के क्षेत्र में हम आज कई मामलों में नंबर एक पर हैं लेकिन अभी भी काफी कुछ किए जाने की संभावना शेष है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है प्रति पशु उत्पादन बढ़ाना। उत्पादन बढ़ाने के लिए एक फार्मूला जी प्लस ई की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि अच्छे प्रदर्शन के लिए पशुओं की नस्ल और उसके आधार पर उनका रखरखाव बहुत आवश्यक है। हमें अपने किसानों और पशुपालकों को यह बताना बहुत आवश्यक है कि किस जलवायु के लिए कौन सी नस्ल उपयुक्त है और किससे हम उत्तम उत्पादन ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि पशु चिकित्सा अधिकारियों को केवल पशुओं की चिकित्सा तक ही खुद को सीमित नहीं करना चाहिए बल्कि हमें पशुधन के संपूर्ण विकास की बात करनी चाहिए और अपनी भूमिका को विस्तार देना चाहिए। हमें प्रयास करना चाहिए कि हमारा पशु बीमार ही न हो। उन्होंने कहा कि पशुधन गणना एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, जिसके आधार पर सारी योजनाओं का निर्माण होता है। उन्होंने समय समय पर होने वाले इस तरह के प्रशिक्षण को पशु चिकित्सकों के साथ विभाग के लिए भी बहुत उपयोगी बताया।

पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ सुरेशचंद मीना ने कहा कि राष्ट्रीय पशुधन मिशन पशुपालकों की आय बढ़ाने का प्रभावी माध्यम है।

उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर्स के रूप में जो भी जानकारी लेकर यहां से जाएं उसे और लोगों तक भी पहुंचाएं और इसका लाभ अधिक से अधिक पशुपालकों को मिल सके ऐसा प्रयास सभी करें। उन्होंने कहा कियदि सही जानकारी सही समय पर पशुपालक तक पहुंच जाए तो उसका सीधा लाभ स्वास्थ्य, उत्पादन और आय बढ़ोतरी के रूप में मिलता है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

अग्रवाल हॉर्ट एण्ड जनरल हॉस्पीटल

अत्याधुनिक सभी सुविधाओं युक्त अस्पताल

H-1-58 ओल्ड रीको, लिंक रोड, बगरू- 0141-2864608

डॉ. अनिल अग्रवाल

MBBS, MD General Medicine

सुविधाएं :- 500 एम.ए. डिजीटल एक्स-रे TMT, ECG मशीन, ट्रेडमील टेस्ट, स्पाइरोमेटरी सोनोग्राफी मशीन, एंबूलेंस, लेबोरेट्री, लिफ्ट, प्राइवेट रूम, ICU जनरेटर की सुविधा उपलब्ध। सभी प्रकार के ऑपरेशन,

मेहसाना डेयरी, अमूल डेयरी, पायस डेयरी से अनुबंधित। ई-मेडिटेक, जेनिन, मेडसेव, जी.एच.पी.एल., एम.डी. इंडिया, यूनिवर्सल सोम्पो इन्श्योरेंस कंपनी HDFC, राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम द्वारा अनुबंधित।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं सम्पादक मांगीलाल शर्मा द्वारा एम.बी. प्रिन्टर्स, एस-76, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, जयपुर से मुद्रित एवं प्लाट नं. 86, शिव कॉलोनी वृन्दावन विहार मुकुन्दपुरा रोड़, भांकरोटा, जयपुर, राज. से प्रकाशित। सम्पादक-मांगीलाल शर्मा 9571919059 (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर होगा)।